RIC, एक त्रिकोण जो अभी भी महत्त्वपूर्ण है

लेखक- पी. एस. राघवन (अध्यक्ष, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

30 जुलाई, 2020

''भारत की विदेश नीति में एक पश्चिम की ओर रुख करने की नीति अस्पष्ट है क्योंकि भारत के लिए रूस और चीन के साथ जुड़ाव भी मायने रखता है।''

पिछले महीने, 23 जून को, कुछ देशों के मन में चिंताएं तब उठने लगीं, जब भारत ने रूस, भारत और चीन (RIC) के विदेश मंत्रियों की एक (आभासी) बैठक में भाग लेने का फैसला किया। वास्तविक नियंत्रण रेखा पर तनाव के बीच, भारत का यह फैसला भारत की विदेश नीति में पश्चिम की ओर रुख करने के संदर्भ में अधिक निर्णायक साबित हो सकता है। हालाँकि, पश्चिम की ओर भारत के रूख को देखते हुए RIC बैठक असंगत प्रतीत होती है। रूस-भारत-चीन समूह (Russia-India-China- RIC) की परिकल्पना वर्ष 1998 में तत्कालीन रूसी विदेश मंत्री येवगेनी प्रिमकोव द्वारा की गई थी।

इस समूह की स्थापना का उद्देश्य 'अमेरिका द्वारा निर्देशित विदेश नीति को समाप्त करना', तथा भारत के साथ पुराने संबंधों को नवीनीकृत करना और चीन के साथ नई दोस्ती को बढ़ावा देना था।

बैठक में नेताओं के बयानों ने उनके पूर्वाग्रहों को दर्शाया। चीनी मंत्री डराने-धमकाने वाली प्रथाओं का विरोध करने, सत्ता की राजनीति को खारिज करने और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में कानून के शासन का समर्थन करने के पक्ष में दिखे। रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों और शीर्षस्थ शासनों के साथ विवाद का निपटान करने के लिए एकतरफा सख्त कदम की आलोचना की। भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने स्पष्ट रूप से कहा कि एक स्थाई विश्व व्यवस्था के लिए प्रमुख शक्तियों को अंतर्राष्ट्रीय कानून का सम्मान करना चाहिए और भागीदारों के वैध हित को पहचानना चाहिए।

प्रारंभिक वर्ष

जब 2000 के दशक की शुरुआत में आरआईसी (RIC) संवाद शुरू हुआ था, तो तीनों देश एक ध्रुवीय दुनिया की बहुपक्षीय व्यवस्था के लिए एक परिवर्तन के लिए खुद को तैयार कर रहे थे। यहाँ बात यू.एस. विरोधी होने की नहीं थी, बल्कि उस वक्त तीनों देशों ने संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ अपने संबंधों को अपनी वैश्विक महत्वाकांक्षाओं के लिए आवश्यक माना था। RIC ने वैश्विक व्यवस्था पर कुछ गैर-पश्चिम (पश्चिम-विरोधी से अलग) दृष्टिकोणों को साझा किया, जैसे कि संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता पर जोर देना, सामाजिक नीतियों पर बाहरी दबाव का विरोध, सत्ता-परिवर्तन में बाहरी हस्तक्षेप आदि प्रमुख हैं। वैश्विक आर्थिक और वित्तीय वास्तुकला के लोकतंत्रीकरण के लिए उनका समर्थन BRIC (ब्राजील को जोड़ने के साथ) के गठन का कारण बना।

आरआईसी संवाद के प्रारंभिक वर्षों में रूस और चीन के साथ भारत के संबंधों में बढ़ोत्तरी हुई। राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के आगमन ने भारत-रूस रणनीतिक साझेदारी के राजनीतिक, रक्षा और ऊर्जा स्तंभों को मजबूत किया। चीन के साथ सीमा विवाद के लिए एक राजनीतिक दृष्टिकोण लाने और अन्य सहयोग विकसित करने के लिए 2003 के फैसले ने संबंधों में बहु-क्षेत्रीय वृद्धि को प्रोत्साहित किया। 2005 में एक समझौता, जो एक सीमावर्ती सीमा में लागू राजनीतिक मापदंडों की पहचान करता है, अरुणाचल प्रदेश में भारत के हितों को स्पष्ट रूप से मान्यता देता है।

भारत-यू.एस. संबंध

यू.एस. के साथ भारत का संबंध, व्यापार और निवेश, एक ऐतिहासिक सिविल न्यूक्लियर समझौते और एक रक्षा संबंध है, जो रूस पर निकट-निर्भरता को दूर करते हुए सैन्य अधिग्रहणों में विविधता लाने के भारत के उद्देश्य को पूरा करता है। जहाँ एक तरफ चीन तेजी से अपनी वैश्विक प्रमुखता के लिए एक चुनौती के रूप में उभर रहा था, वहीं यू.एस. एशिया में एक लोकतांत्रिक भारत के साथ साझेदारी करने में अपना फायदा देख रहा था। पूर्व अमेरिकी विदेश मंत्री और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार कोंडोलीजा राइस ने अपने संस्मरण में इस बारे में लिखा भी है।

बाहरी वातावरण में परिवर्तन इन राजनीतिक समीकरणों पर प्रभाव डालते हैं। अन्य परेशानियों के बीच, चीन ने 2005 के समझौते को दरकिनार करके चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे का शुभारंभ किया, साथ ही वह अपने पड़ोस में भारत के प्रभाव को कम करने की कोशिश करने लगा और हिंद महासागर में अपनी सैन्य और आर्थिक उपस्थिति का विस्तार करने में जुट गया।

भारत-यू.एस. संबंधों के प्रगाढ़ होने के कारण रूस के साथ संबंधों की बनावट भी बदल गई है, विशेष रूप से रक्षा और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में। जैसा कि 2014 में यू.एस.-रूस के संबंध का अंत हुआ (रूस द्वारा क्रीमिया के राज्य-हरण/अधिग्रहण के बाद),

रूस ने यू.एस. के खिलाफ अफगानिस्तान में तालिबान को बढ़ावा देना शुरू किया और पाकिस्तान को तालिबान की सहायता करने के लिए सूचीबद्ध किया। रूस को अलग-थलग करने के लिए पश्चिमी अभियान रूस को चीन के बहुत करीब ले गया- विशेष रूप से रक्षा सहयोग में। इस प्रकार, प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर अतिव्यापी या समान दृष्टिकोण का आरआईसी दावा आज खोखला प्रतीत होता है।

समूह में लिंक

इस पर ध्यान दिए जाने के बाद, रूस-भारत-चीन की भागीदारी अभी भी महत्व रखती है। भारत शंघाई सहयोग संगठन (SCO) में है, जो रूस और चीन द्वारा संचालित है और इसमें चार मध्य एशियाई देश भी शामिल हैं। मध्य एशियाई देश रणनीतिक रूप से स्थित हैं, जो हमारे अशांत पड़ोस की सीमा से जुड़े हुए हैं। भूमि का एक टुकड़ा पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर से ताजिकिस्तान को अलग करता है।

एससीओ में पाकिस्तान की सदस्यता और ईरान एवं अफगानिस्तान के संभावित प्रवेश (सदस्य राज्यों के रूप में) ने भारत के लिए एससीओ के महत्व को बढ़ाया है। भारत, भू-सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थिति में अवस्थित है। सागरीय और महाद्वीपीय, दोनों क्षेत्रों में चीन के 'आधिपत्य' को चुनौती देने हेतु भारत के लिए यह समूह काफी महत्त्वपूर्ण है। भारत के लिए इस क्षेत्र में रूस-चीन की गतिशीलता को आकार देना महत्त्वपूर्ण है। मध्य एशियाई देशों ने भी संकेत दिया है कि वे रूस-चीन के द्वयाधिकार के कमजोर पड़ने का स्वागत करेंगे। पश्चिमी भारत से ईरान-अफगानिस्तान और मध्य एशिया के लिए समुद्री / सड़क / रेल लिंक हेतु भारत-ईरान-रूस परियोजना, मध्य एशिया में रूस तथा चीन के साथ भारत की उपस्थिति दर्ज करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण पहल है।

रूस के साथ भारत की साझेदारी के रक्षा और ऊर्जा स्तंभ मजबूत बने हुए हैं। रूस के प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों तक पहुँच हमारी सुरक्षा-आपूर्ति में वृद्धि करने में सहायक हो सकती है जिसका महत्व COVID-19 के दौरान स्पष्ट हो चुका है। चीन के साथ भी हमें हाल के घटनाक्रमों से द्विपक्षीय विषमताओं को पाटने का प्रयास करना चाहिए, केवल अलगाव एक विकल्प नहीं हो सकता। हमें द्विपक्षीय और बहुपक्षीय रूप से कई मुद्दों पर काम करना होगा, यहाँ तक कि सीमा पर अपने हितों की रक्षा करते हुए प्रौद्योगिकी और अर्थव्यवस्था में भी।

इंडो-पैसिफिक मुद्दा

आरआईसी में सबसे अधिक महत्व रखने वाला इंडो-पैसिफिक है। भारत के लिए, इंडो-पैसिफिक क्षेत्र आर्थिक और सुरक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र है, जिसमें किसी भी बाह्य शक्ति के प्रभुत्व को रोकने के लिए एक सहयोगी व्यवस्था होनी चाहिए। चीन हमारी भारत-प्रशांत पहल को अमेरिका के नेतृत्व वाली नीति के हिस्से के रूप में देखता है जिसमें चीन शामिल है।

रूस का विदेश मंत्रालय इंडो-पैसिफिक को एक अमेरिकी चाल के रूप में देखता है, रूस के अनुसार अमेरिका, चीन और रूस के खिलाफ एक सैन्य गठबंधन में भारत और जापान का उपयोग कर सकता है। रूसी सुदूर पूर्व के साथ भारत के आर्थिक संबंधों और चेन्नई-व्लादिवोस्तोक समुद्री गलियारे की सक्रियता पर भारत का ध्यान रूस को यह समझाने में मदद् कर सकता है कि प्रशांत में उसके हित इंडो-पैसिफिक में चीनी प्रभुत्व को कमजोर करने में हमारी रुचि के अनुकूल हैं।

कार्रवाई की स्वायत्तता

वर्तमान भारत-चीन विवाद ने भारत को यू.एस. के साथ संबंध प्रगाढ़ करने पर मजबूर कर दिया है। राष्ट्रीय सुरक्षा को पूरी तरह से अन्य देश के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता है। कार्रवाई की स्वायत्तता के लिए भारत के विचार भौगोलिक वास्तविकताओं, ऐतिहासिक विरासत और वैश्विक महत्वाकांक्षाओं पर आधारित हैं, न कि अवशिष्ट शीत युद्ध मानसिकता पर।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

प्र. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. रूस-भारत-चीन (RIC) समूह की स्थापना वर्ष 1998 में हुई थी।
2. शंघाई सहयोग संगठन की स्थापना वर्ष 2005 में शंघाई-5 संगठन के स्थान पर की गई।
3. भारत, शंघाई सहयोग संगठन के संस्थापक सदस्यों में से एक है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 3 (b) 1 और 2
(c) केवल 1 (d) उपर्युक्त सभी

Expected Question (Prelims Exams)

Q. Consider the following statements:

1. The Russia-India-China (RIC) group was established in the year 1998.
2. The Shanghai Cooperation Organization was established in the year 2005 in place of the 'Shanghai-5' organization.
3. India is one of the founding members of SCO.

Which of the above statements is/are correct?

(a) 1 and 3 (b) 1 and 2
(c) 3 only (d) All of the above

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्र. हाल ही में चीन के साथ सीमा विवाद के चलते भारत का झुकाव पश्चिम की ओर बढ़ता दिखाई पड़ रहा है। ऐसे में भारत का RIC बैठक में भाग लेने का निर्णय उसकी विदेश नीति को संतुलित करने में कहाँ तक सफल होगा? परीक्षण कीजिये।

Q. Recently, due to the border dispute with China, India's inclination seems to be moving towards the west. In such a situation, how far will India's decision to attend the RIC meeting be successful in balancing its foreign policy? Examine.

GS WORLD